M. T. B. COLLEGE, SURAT

Manuscripts Library

No. Ref. Set. 1293

Title :- Durgastava

1293

Incomplete

:	:	Durgā Stava	: Title
:	:		: Author
:	:		: Editor
:	:		: Year, Vols.
:	:		: Publisher
1293 :	:		: Remarks

क्रोंच पद्माक्षी पद्मस्था पद्मसंभवा॥ ह्रींका
रीकुंडली धात्री हृत्पद्मस्था सुलोचना॥ श्रींकारी
भूषणा लक्ष्मी क्लींकारी क्लेशनाशिनी॥१८॥ ह
रिप्रिया हरेर्मूर्तिर्हरिनेत्रकृतालया॥ वैष्णवी वि
ष्णुरूपा च विष्णुमातास्वरूपिणी॥१९॥ हरिवल्ल
भा शांता हरिवक्षस्थितालया॥ विष्णुमाया वि
शालाक्षी विशालनयनोज्वला॥२०॥ विश्वेश्व
री च विश्वात्मा विश्वेशी विश्वरूपिणी॥ शिवेश्व
री शिवाधारा शिवनाथा शिवप्रिया॥२१॥ शिवना

ताशिवाक्षीचशिवदा शिवरूपिणी ।। भवेश्वरी भ
वाराध्या भवेशी भवनायिका ।।२२।। भवमाता भवा
गम्या भवकंटकनाशिनी ।। भवप्रिया भवानंदा भ
वानी भवमोचिनी ।।२३।। गीतिर्वरिष्ठा सावित्री ब्र
ह्माणी ब्रह्मरूपिणी ।। ब्रह्मेशी ब्रह्मदा ब्राह्मी ब्र
ह्माणी ब्रह्मवादिनी ।।२४।। दुर्गस्था दुर्गरूपा च
३ दुर्गा दुर्गतिनाशिनी ।। जयेशी ब्रह्मदा ब्राह्मीणी
ब्रह्मवादिनी ।। स्वर्गस्था स्वर्गरूपा च स्वच्चा स्वर्गस्ति
हारिणी ।। स्वच्छा मा निर्गमा दांता दया द्रोध्री दुरापहा ।।२५।।
दूरध्नी च दुराराध्या दुरदुष्कृत नाशिनी ।। पंचस्था
पंचमी पूर्णा पूर्णपीठ निवासिनी ।।२६।। सत्वस्था
सत्वरूपा च सत्वदा सत्वसंभवा ।। रजोरूपा रजस्था
च रजोगुण समुद्भवा ।।२७।। तामसी तमरूपा च ता
मसी तामसप्रिया ।। तमोगुण समुद्भूता सात्विका रा
जसी तमा ।।२९।। कला काष्ठा निमेषा च स्वकृता
तदनंतरा ।। अर्द्धमासा च मासा च संवत्सरस्व
रूपिणि ।।३०।। युगस्था युगरूपा च कल्पस्था
कल्परूपिणि ।। नानारत्न विचित्रांगी नानाभरण
मंडिता ।।३१।। विश्वात्मिका विश्वमाता विश्वपाशा वि
धायिनी ।। विश्वासकारिणी विश्वा विश्वशक्ति

विचक्षणा ॥ ७२ ॥ जपाकुसुमसंकाशा दाडिमीकुसु
मोपमा ॥ चतुरंगी चतुर्बाहुश्चतुराचारहासि
नी ॥ ७३ ॥ सर्वेशी सर्वदा सर्वा सर्वदा सर्वदायिनी ॥
सर्वेश्वरी सर्वविद्या शर्वाणी सर्वमंगला ॥ नलि
नी नंदिनी नंदा आनंदानंदवर्द्धिनी ॥ व्यापिनी स
र्वभूतेषु भवभारविनाशिनी ॥ ७५ ॥ कुलिनी कुल
मध्यस्था कुलधर्मोपदेशिनी ॥ सर्वशृंगारवे
षाढ्या पाशांकुशकरोद्यता ॥ ७६ ॥ सूर्यकोटिस
हस्राभा चंद्रकोटिनिभानना ॥ गणेशकोटिला
वण्या विष्णुकोट्यरिमर्द्दिनी ॥ ७७ ॥ दावाग्निकोटि

ज्वलिनी रुद्रकोट्युग्ररूपिणी ॥ समुद्रकोटिगं
भीरा वायुकोटिमहाबला ॥ ७८ ॥ आकाशको
टिविस्तारा यमकोटिभयंकरा ॥ मेरुकोटिसमु
च्छ्राया गणकोटिसमृद्धिदा ॥ ७९ ॥ विष्कलं कोनि
राधारा निर्गुणा गुणवर्जिता ॥ अशोका शोक
रहिता तापत्रयविवर्जिता ॥ ८० ॥ विशिष्टा विश्व
जननी विश्वमोहविधारिणी ॥ चित्रा विचित्रा
चित्रांगी हेतुगर्भकुलेश्वरी ॥ ८१ ॥ इच्छाशक्ति
र्ज्ञानशक्तिः क्रियाशक्तिः शुचिस्मिता ॥ श्रुतिस्मृ
तिप्रज्ञा महानदा पंचतत्त्वपरिस्थिता ॥ [illegible]

मयी सत्या श्रुतिरूपा श्रुतिप्रिया ॥ श्रुति ८३ ॥

तीहिमवत्पुत्री पाशस्था पाशरूपिणी ॥४६॥
जयंति भद्रकाली च अहल्या कुलनायिका
भूतधात्री च भूतेशी भूतस्था भूतभाविनी ॥४७॥
महाकुंडलिनी शक्ति महाविभववर्द्धिनी हंसा
क्षी हंसरूपा च हंसस्था हंसरूपिणी ॥४८॥
सोमसूर्याग्निमध्यस्था मणिपूरकवासिनी ॥ष
ट्पत्रांभोजमध्यस्था मणिपूरनिवासिनी ॥४९॥
द्वादशारसरोजस्था सूर्यमंडलवासिनी ॥अ
कलंकाशशांकाषोडशारतिवासिनी ॥५०॥ द्विप
त्रदलमध्यस्था ललाटतलवासिनी ॥ डाकिनी

शाकिनी चैव लाकिनी काकिनी तथा ॥[illegible]॥ शाकिनी
हाकिनी चैव षट्चक्रक्रमवासिनी ॥ सृष्टिस्थि
ति विनाशा च सृष्टिस्थित्यंतकारिणी ॥५२॥ श्रीकंठ
प्रिया श्रीकंठनादाख्या बिंदुमालिनी ॥ चतुषष्टि
कलाधारा हेमदंडसमाश्रया ॥५०॥ महाकालीद्यु
तिर्मेधा स्वधा तुष्टि महाद्युतिः ॥ हिंगुला मंगला
शिवा सुषुम्णा मध्यगामिनी ॥५१॥ पाराघोरकराको
क्षी विजया जयशालिनी ॥ हृद्ध्यम विलया देवी श्री
मा भैरवनांदिनी ॥५२॥ आकाशलिंगभूता च
भुवनोद्यानवासिनी ॥ महासूक्ष्माभयाका

ली भीमरूपा महाबला ।।५३।। मेनकागर्भसंभू
ता तप्तकांचनसंनिभा ।। अंतस्था कूटबीजा च
त्रिकुटाचक्रवासिनी ।।५४।। वर्णज्ञानरहिता पं
चाशद्देहविभेदिनी ।। विद्याधरी लोकधात्री अ
प्सरा अप्सरप्रिया ।।५५।। दाक्षदाक्षायणी दिक्षा द
क्षयज्ञविनाशिनी ।। यशस्विनी यशःपूर्णा यशो
दागर्भसंभवा ।।५६।। देवकी देवमाता च राधिका
कृष्णवल्लभा ।। अरुंधती शची द्रोपदी गांधारी गं
धमोदिनी ।।५७।। ध्यानातीता ध्यानगम्या ध्याना
ध्यानविधारिणी ।। लंबोदरी च लंबोष्ठी जं

बुवती जलोदरी ।।५८।। सोहादरी मुक्तकेशी मुक्ति
कामार्थसिद्धिदा ।। तपस्विनी तपोवित्तपोनिष्टा
अपर्णा पर्णभक्षिणी ।।५९।। बाणचापधरा वीरा
पांचाली पंचमप्रिया ।। गुह्या गंभीरा गहना गुह्य
तत्वा निरंजना ।।६०।। अशरीरा शरीरस्था संसा
रार्णवतारिणी ।। अमृता निष्कला भद्रा सकला
कृष्णपिंगला ।।६१।। चक्रेश्वरी चक्रहस्ता पाशा
चक्रविनाशिनी ।। पद्मरागप्रतीकाशा निर्मलाका
शसंनिभा ।।६२।। ऊर्ध्वस्था ऊर्ध्वरूपा च ऊर्ध्वप
द्मनिवासिनी ।। कार्यकारणकर्त्री च पार्वी स्थ

रूपसंस्थिता ।।६३।। रसस्वादा रसाध्यक्षा गंधज्ञा
गंधरूपिणी ।। परब्रह्मस्वरूपा च परब्रह्मनिवा
सिनी ।।६४।। शब्दब्रह्मस्वरूपा च शब्दस्था श
ब्दवर्जिता ।। [illegible] गुह्या ज्ञानवीज्ञाक्तिः स्वल ज्ञानस्वरू
पिणी ।।६५।। सरस्वती भूतमाता महाभूताधिप्रिया
हृद्या ।। श्रुतिप्रज्ञा धर्मसिद्धिः दक्षकन्यापराजिता
कामसंदीपिनी कामा सदाकामकुतूहला ।।६६।।
भोगोपचारकुशला अमला ह्यमलानना ।। भक्ता
नुकंपिनी मैत्री शरणागतवत्सला ।।६७।। सहस्र
भुजा चिदशक्तिः सहस्राक्षा शतानना ।। सिद्ध

लक्ष्मी महालक्ष्मी देवलक्ष्मीः सुलक्षणा ।।६९।।
यज्ञसारा तपःसारा धर्मसारा जनेश्वरी ।। विश्वोदरी
विश्वसृष्टा विश्वाख्या विश्वतोमुखी ।।७०।। विश्वस्याश्र
यणाख्या विश्वमाला परात्मिका ।। नरूपादिसंख्या
शाकरणानेक संकुला ।।७१।। क्षोभिनी मोहिनी चैव
स्तंभिनी जृंभिणी तथा ।। रथिनी ध्वजिनी चैव सर्व
मंत्रमयी त्रयी ।।७२।। ज्ञानमुद्रा महामुद्रा जपमुद्रा म
होत्सवा ।। जटाजूटधरा मुक्ता सूक्ष्मशांतिविभीष
णा ।।७३।। दिपि चर्मपरीधाना चीरवल्कलधारिणी ।
त्रिमूल डमरू धरा नरमालाविभूषणा ।।७४।। अ
ष

उग्ररूपिणी चोभाक्ल्यातद्दहनोपमा।। त्रैलोक्य
साक्षिणी साध्या सिद्ध साधक वत्सला।।७५।। सर्ववि
द्यामयी सारा असुरां आविधारिणी।। सुभगा सु
मुखी सौम्या सुरूपा सोमभूषणा।।७६।। शुद्धस्फ
टिकसंकाशा महावृषभवाहिनी।। महिषी महिषारू
ढा महिषासुरघातिनी।।७७।। दमिनी दामिनी दां
ता दयादोग्ध्री दुरापहा।। अग्निजिह्वा महाघो
राघोरा घोरतरानना।।७८।। नारायणी नारसिं १०
ही नृसिंहहृदयस्थिता।। योगेश्वरी योगरूपा।
योगमाता च योगिनी।।७९।। खेचरी भूचरी खेला